शताब्दी संस्करण।

* ओ३म् खम् ब्रह्म *

नारी धर्म्म विचार।

प्रथम भाग।

श्री० मु० इन्द्रजीतजी तिलहर निवासी कृत।

जिसमें

स्त्रियों के कर्त्तव्यकर्म का सविस्तार वर्णन कर बतलाया है कि वह किस प्रकार अपनी संतानोंको धर्मात्मा, वीर और पण्डित बनाकर देश का सुधारकर सकती हैं और मनुष्यों के साथ उन्हें किस प्रकार वर्त्तना चाहिये, इस के अतिरिक्त अनेक भारतवर्षकी पतिव्रता, वीर, विदुषी और धर्मात्मा स्त्रियों के जीवनचरित्र भी लिखे हैं, जो जो आवश्यक बातें इसमें लिखी हैं, वह देखने से ही विदित हो सकती हैं।

जिसको—लाला द्वारकाप्रसाद अत्तार

बाज़ार बहादुरगंज शाहजहाँपुर ने ग्रन्थकर्त्ता की आज्ञा से छपाया।

पं० [illegible]प्रसाद शुक्ल द्वारा देशबन्धु प्रेस बाराबंकी में मुद्रित।

सप्तम बार २००० } सन् १९२५ ई० { मूल्य।।।)